व-27

❀ अनन्त श्रीकनकभवनबिहारिणौ विजयेतेतराम् ❀

शयनकुँज की कुँजी

प्रकाशक—

पुस्तकालय विभाग,

श्रीकनकभवन अयोध्या ।

सन् १९४१ ई० ।

मुद्रक-

श्रीसीताराम प्रिंटिंगवर्क्स श्रीअयोध्याजी ।

मूल्य प्रेम

❀ अनन्त श्रीकनकभवनविहारिणौ विजयेतेतराम् ❀

आप यदा कदा जब शयनकुञ्ज श्रीकनकभवन अयोध्याधामके दर्शनोंको जाते हैं तब आपको वहाँ श्रीअष्ट सहचरी यूथेश्वरियोंके कुञ्जमें एक एक दोहा लिखा मिलता है। तथा एक दोहा सरकारी सेजके समीप श्रीचन्द्रकलाजीकी चौकीके ऊपर भी।

ये उपरोक्त नौ दोहे जो,प्राचीन लिपिसे अनुवादित परम्परासे महलमें चले आते हैं (जिनके मूल श्लोक भी प्रति सहचरिजीकी व्याख्यामें अंकित हैं), उनको पढ़तो सब कोई लेते हैं; परन्तु श्रीयूथेश्वरियोंका यथार्थ स्वरूप-ज्ञान, उनकी महिमा, उनकी मणिमय कुंजोंकी दिशा कि शयनकुञ्जके किस ओर उनके विशाल प्रासाद थे इसको कोई कोई महात्मा रसिक ही जानते हैं। अत: भावुक महानुभावोंके हेतु किंचित व्याख्या कर देना अनुचित नहीं।

प्रकाशक।

यह निम्नाङ्कित यूथेश्वरीजी नित्य साकेतधामसे श्रीयुगल सरकारके साथ त्रेता युगमें अवतीर्ण हुई थीं। उनका संक्षिप्त विवरण, उनकी महलकी सेवा, उनकी मणिमय कुंजों (श्रीयुगल सरकारके शयनकुञ्जोंसे किस ओर थी) की दिशा, नीचे कोष्ठके चित्रमें बनादी गई है।

श्रीचन्द्रकलाजीका विवरण पृष्ठ ५ में देखिए।

क्रमांक	नाम यूथेश्वरीजी	शयनकुञ्जसे किस ओर इनके कुञ्ज हैं	सेवाका संक्षिप्त विवरण
१	श्रीचारुशीलाजी	पूर्व दिशा	आप यूथेश्वरियोंमें सर्वेश्वरीजी हैं। नाद वेद–गान–वादनसे श्रीयुगल सरकारको रिझाना; रासलीलाका प्रवन्ध करना आपकी नित्य सेवा श्रीकनकभवनमें है।
२	श्रीसुभगाजी	अग्निकोण	श्रीयुगल सरकारका सेज लगाना तथा महलकी स्वच्छताका निरीक्षण आप करती हैं।
३	श्रीवरारोहाजी	दक्षिण दिशा	भोजन प्रबंध।
४	श्रीपद्मगंधाजी	नैऋत्य कोण	सरकारको जेवर पहिनाना व उन्हें रखना।
५	श्रीसुलोचनाजी	पश्चिमदिशा	श्रीयुगल सरकारको १६ श्रृंगार, १२ आभूषण पहिनाना।
६	श्रीहेमाकरिजी	वायव्य कोण	सरकारको पान पवाना।
७	श्रीक्षेमाजी	उत्तर दिशा	श्रीयुगल सरकारको स्नान, उबटन मालिश आदि करना व जल चलाना।
८	श्रीलक्ष्मणाजी	ईशान कोण	सरकारको पुष्प आभूषण बनाकर पहिनाना।

नोट— पृष्ठ ४में देखिए।

नोट

(१) मुखाग्र करने हेतु एक कवित्त व दोहा निम्नाङ्कित है।
(२) सहचरिजीके माता पिताके नाम पृष्ठ १३में देखिए।
(३) इनका सेवा समय पृष्ठ १४में है ।

❀ कवित्त ❀

गानमें प्रधान चारुशीला बस प्राची पौर सुभगा सुहाई सेज कोणानल राजहीं । भोजन प्रबन्ध बरारोहा दिश दच्छिन रहि जेवरात नैॠत पद्मगंधा भ्राजही। 'मुक्ता' सुलोचनाजी पश्चिम अंजनादि राख हेमाकरि वायव वास बीरी चलावहीं । क्षेमाजू विचित्र वस्त्र लीने रहिं उत्तर कुञ्ज लक्ष्मन। स्वच्छ पुष्प आभूषन साजहीं ॥

❀ दोहा ❀

आठ पहर हाजिर रहत, सहचरि अष्ट प्रधान ।
आठहु दिशि बसि सेवहीं, सीताराम सुजान ॥

नोट-

श्रीलक्ष्मणाजीके कुंजकी दिशा उपरोक्त कवित्तमें नहीं है। परन्तु जब साथही सातों यूथेश्वरियोंकी दिशा लिखी है तो शेष आठवीं दिशा ईशान श्रीलक्ष्मनाजीके कुंजकी समझ लेनी चाहिए।

श्रीचन्द्रकलाजी

❀ मूल श्लोक ❀

स्वर्णालये न्याय सुराजनीतिर्विभाग मंत्री प्रतिवेदिका*च ।
श्रीमैथिली सर्वविधान दक्षा विभातिसा चन्द्रकला कलेव ॥

दोहा- न्यायालय श्रीरामसिय, पाठन पठन प्रवीन ।
विश्व विनय स्वीकृति सदा, चन्द्रकला आधीन ॥

श्रीकनकभवनमें आप श्रीयुगल सरकारके लेखन. पठन पाठन विभाग" का कार्य संपादन करती हैं । प्रार्थियोंके विनय पत्र सुनाना, उनपर आज्ञा प्रदान करना, आपहोका कर्त्तव्य है । विराटरूपमें श्रीचारुशीलाजीके साथ महाप्रलयके अंतमें, तत्त्व पंचीकरणमें आप समान पदसे सम्मिलित हैं। सरस्वती, शिवजी धर्मराज आदि आपहीके विभागाधीन हैं ।

एक विग्रहसे तो आप उपरोक्त कार्यकी सेवा महलमें करती हैं । दूसरे विग्रहसे आप श्रीभरतजी होकर अवतीर्ण हुईं ।

जैसी और यूथेश्वरियोंकी कुंजें निर्धारित हैं वैसी आपकी कोई पृथक् कुञ्ज कनकभवनमें नहीं है। श्रीयुगल सरकारके ही कुञ्जोंमें समय समयपर सेवानुकूल साथ अथवा अलग रहा करती हैं और शयन समय किसी सरकारी कुञ्जमें ही विश्राम करती हैं ।

आजकलके हिसाबसे आपको Judicial ~~member~~ minister (न्याय-सचिव) कह सकते हैं ।

---

*पेशकार आपके पिताका नाम चन्द्रभानुजी
माताका नाम चन्द्रप्रभाजी

श्रीचारुशीलाजी

❀ मूल श्लोक ❀

श्रीचारुशीला प्रथमास्ति लोक मांगल्य कर्त्री भुवनाभिरामा ।
गान्धर्व विद्या कुशला मनोज्ञा श्रीमैथिली प्रेममयी सखीयम् ।

❀ दोहा ❀

प्रथम चारुशीला सुभग गान कला सुप्रवीन ।
युगल केलि रचना रसिक रास रहस रस लीन ॥

आप अष्ट यूथेश्वरियोंकी सर्वेश्वरीजी हैं । विराट रूपमें आप अखिल ब्रह्माण्डके यावत उत्सव मङ्गलाचार, जन्म, विवाह, नृत्य, गान वादनादिकी अधिष्ठात्री देवी हैं । वेदवानी गणनायक, गंधर्व, अपसरा, किन्नर, नाक नटी आदि आपहीके विभागाधीन हैं ।

महलमें आपकी सेवा श्रीयुगल सरकारको गान, वादन, नृत्य कर रिझानेकी है। रासलीला श्रीयुगल सरकारके रहस्यका प्रबंध करना, आपहीका कर्त्तव्य है। त्रेतामें जब श्रीयुगल सरकारका प्रादुर्भाव श्रीअवधधाममें हुआ तब एक विग्रहसे तो आप नित्य श्रीकनकभवनमें उपरोक्त सेवा निरंतर करती थीं तथा दूसरे विग्रह से आप श्रीहनुमत्‌लालजी होकर किष्किन्धामें अवतरीं ।

कल्पान्तरमें प्रत्येक सृष्टि रचनाके आदिमें तत्त्वों का पंचीकरण आपके विभागसे संबंधित है । ब्रह्मा, विश्वकर्मादि आपहीके विभागके आधीन हैं । आप श्री युगल सरकारकी प्रधान सचिव

हैं। तत्सुख सुखी उपासनाचार्य है ।

आधुनिक विधान रचनामें आपको प्रधानमंत्री (Chief minister) श्रीयुगलसरकारका कह सकते हैं।

श्रीसुभगाजी

❀ मूल श्लोक ❀

इयं द्वितीया शुभगा शुभाढ्या शय्याचरी श्रीजनकात्मजायाः ।
मनोज मानोन्नयनप्रदीप्ता सम्पूर्ण कामेश्वरि तामुपेता ॥

❀ दोहा ❀

सुभगा सुभग शिरोमणी, सेज सुहाई सेव ।
सियबल्लभ सुख सुरति रस, सकल जानसो भेव ॥

आपकी सेवा महलमें सरकारी सेजको सुसज्जित कर स्वच्छ रखना है। सेज संबंधित रहस्यकी पूर्ण जानकार हैं। सरकारी वस्त्रागार आपहीके आधीन हैं। विराटरूपमें आप बृहद् ब्रह्माण्डके वस्त्रोंकी तथा लज्जा; स्वच्छता, आरोग्यकी अधिष्ठात्री देवी हैं। आकाश और वायु तत्त्वोंपर आपका ही स्वत्व है। धन्वन्तरि अश्विनीकुमारादि आपहीके विभागाधीन हैं।

आजकलके हिसाबसे आपको Sanitation minister श्रीयुगल सरकार कह सकते हैं।

श्रीबरारोहाजी

❀ मूल श्लोक ❀

बरोरुरेखा ललना ललामा विश्वंभरा चन्द्रमुखी तृतीया ।
महान साधीश्वरितां गता श्रीविदेहजाया: कनकालयेस्मिन् ॥

❀ दोहा ❀

सखी बरारोहा हरष भोजन युगल जिंवाय ।
प्राण प्राणनी प्राणपति राखत प्राण लगाय ॥

श्रीकनकभवनमें आप सरकारी अटाला, कोठा, भंडार व भोजनालयकी प्रबंधकर्त्री हैं। श्रीयुगल सरकारको आपही भोजन कराती हैं। विराटरूपमें आप विश्व भरण पोषणकी अधिष्ठात्री देवी हैं। यावत् ब्रह्माण्डके भण्डारे, पंत-पक्ति आपही कराती हैं। श्रीअन्नपूर्णा, अष्टसिद्धि आदि सब आपहीके विभागाधीन हैं। अग्नि तत्त्व पर सर्वाधिकार आपही का है।

आजकलके हिसाबसे आपको Home minister (गृह सचिव) श्रीयुगल सरकारका कह सकते हैं।

श्रीपद्मगंधाजी

❀ मूल श्लोक ❀

अलंकृतायाभरणै प्रसन्ना श्रीपद्मगंधा सुभगा चतुर्था ।
त्रैलोक्य सौभाग्य सुखास्पदेयं श्रीजानकींभूषयति प्रियेण ॥

❀ दोहा ❀

सखी पद्मगंधा सुभग, भूषण सेवित अंग ।
सदा विभूषित आप तन, युगल माधुरी रंग ॥

आप श्रीयुगल सरकारकी कोषाध्यक्षा हैं। सरकारी अमूल्य आभूषण आपहीके पास रहते हैं । सरकारको जड़ाऊ मणि, स्वर्णादिके आभूषण आपही धारण कराती हैं । श्री युगल सरकारको आप अर्थसचिव हैं। विराट रूपमें आप अखिल ब्रह्माण्डके यावत् कोष, धन, मणि-आभूषणादिकी अधिष्ठात्री देवी हैं। धनद् कुवेर, नव निधि आदि आपहीकी आज्ञा में चलते हैं ।

आजकलके हिसाबसे आपको श्रीयुगलसरकारका Finance minister कह सकते हैं ।

श्रीसुलोचनाजी

❀ मूल श्लोक ❀

यथार्थनामा शरसंख्यकेयं सुलोचना विश्व समृद्धि कर्त्री ।
सुगंधितैश्चारु शुभाङ्गरागैः स्वां स्वामिनीं रञ्जयते सुखेन ॥

❀ दोहा ❀

अलि सुलोचना चित्रवित अंजन तिलक संभार ।
अङ्ग राग सिय लालकौ जीवत लख श्रृंगार ॥

श्रीकनकभवन में आपही श्रीयुगल सरकार नवनागर नागरि जूको नित्य द्वादश आभूषण १६ श्रृंगारसे सुसज्जित करती हैं। विराट रूपसे आप समस्त विश्वके आनन्द समृद्धिकी अधिष्ठात्री देवी हैं। एक विग्रहसे आप महलमें सेवा करती हैं दूसरे विग्रह से आप शत्रुघ्नजी हैं।

आजकलके हिसाबसे आपको श्रीयुगल सरकारका Executive minister (प्रबंध सचिव कह सकते हैं।

श्रीहेमाकरिजी

❀ मूल श्लोक ❀

सुहेमवर्णा रसिका रसाख्या हेमाकरी हेमसुवर्षिणीयम्।
ताम्बूल सौगन्धिक वस्तु दाने श्रीमत्किशोर्या नियता नियुक्ता ॥

❀ दोहा ❀

हेमाकरि बीरी सदा हसि दम्पति मुख देत ।
सम्पति राग सुहागकी बड़भागिन उरहेत ॥

महलका ताम्बूल विभाग आपके आधीन है। आपकी नित्य सेवा श्रीयुगल सरकार निकुञ्ज विहारी विहारिणीजूको ताम्बूल लगाकर पवाना है।

विराटरूपसे आप त्रैलोक्यकी यावत सुगंधित द्रव्योंका व समस्त प्रकारके मसाले, इत्र केसर, कस्तूरी, गोरोचन, चन्दन चोवादिकी अधिष्ठात्री देवी हैं। महिलाओंके सुहाग, व विश्व परमपद तथा अभ्युत्थानकी आपही सूत्रधार हैं। श्रीकिशोरीजी

की आप उत्सव सचिव हैं ।

नये हिसाबसे आपको श्रीयुगल सरकारका Ceremonial minister (उत्सव सचिव) कह सकते हैं ।

श्रीक्षेमाकरिजी

❀ मूल श्लोक ❀

या सम्ममीभाति विभर्ति सेयंसुस्नान सामग्रि समूह रक्षाम् ।
स साधयित्री प्रिययोः सुवेषां क्षेमा सदा क्षेमकरी प्रसिद्धा ॥

❀ दोहा ❀

क्षेमा समय स्नान सम, बसन विचित्र बनाय ।
सुरुचि सुहावनि सुखद ऋतु पिय प्यारी पहिराय ॥

श्रीकनकभवन महलमें सरकार नवल लाडिली लालजूको स्नान कराना, जलविहार कराना, उबटन फुलेल, मालिश तथा जल पिलाना, शरबत इत्यादिकी सेवा, चरणोदक वितरण, प्रभाती, हथ पखरवाई सब आपही कराती है ।

विराट स्वरूपमें आप अखिल ब्रह्माण्डकी बृष्टि यावत सर सरिता, समुद्र जहांतक भी जलका संबंध है उसकी अधिष्ठात्री देवी हैं । जलतत्त्व आपहीके आधीन है। इन्द्र वरुणादि आप हीके अनुशासनमें रहकर अपना कार्य संपादन करते हैं ।

आजकलके हिसाबसे आपको श्रीयुगल सरकारका (जल-विभाग मंत्री) कह जकते हैं ।

श्रीलक्ष्मणाजी

❀ मूल श्लोक ❀

श्रीलक्ष्मणा लक्षण लक्ष लक्ष्या प्रसूनभूषाकरणे सुदक्षा ।
श्री प्रेयसी प्रीतिकरा त्रिलोके प्रीतिप्रदा चन्द्रकलार्ध संख्या ॥

❀ दोहा ❀

लक्ष्मना मन लक्षगुन पुष्प विभूषन साज ।
बिहँसि बिहँसि पहरावतीं, सियवल्लभ महराज ॥

श्रीकनकमहलमें फूल मुक्केस माला, पुष्प आभूषण बना कर श्री मोहनी मोहनजूको नित्य ऋतु अनुकूल पहिनाना, सरकारको बनविहार कराना आपकी नित्य सेवा है ।

एक विग्रहसे आप महलमें सेवा करती हैं दूसरे बिग्रहसे आप श्रीलक्ष्मणजी हैं ।

विराट रूपमें आप अखिल ब्रह्माण्डके पर्वत, वन, बाटिका, कृषि, पक्षी, बनजीव, कीट पतङ्गादि तथा कला, शिल्प, वायु जलयान; गो; अश्व; गज बाहनादिकी अधिष्ठात्री देवी हैं । सूर्य चंद्र ग्रहादि आपहीके विभागाधीन हैं । आप पृथ्वी तत्त्वकी सर्वाधिकारिणी देवी हैं ।

आपको आजकलके हिसाबसे श्रीयुगल सरकारका ~~Forest~~ Botany and Art minister (बनस्पति एवं कला-सचिव) कह सकते हैं ।

पि० नाम	मा० नाम	सुनाम श्री यूथेश्वरि
शत्रु जित	चन्द्रकान्ति	चारुशीलाजी
अरिमर्दन	शुभद्रा	हेमाजी
अरितापन	सुवृता	क्षेमाजी
महिमंगल	आमोदनी	वरारोहाजी
बलाकर	शोभनांगी	पद्मगन्धाजी
तेजशाली	बिलक्षा	सुलोचनाजी
प्रतापन	विनीता	सुभगाजी
यशशाली	बिदग्धा	लक्ष्मणाजी

नोट— आप उपरोक्त अष्ट यूथेश्वरी तथा श्रीचन्द्रकलाजी प्रख्यात निमकुल जनक बंश में श्रीजनकपुरमें ही अखिल ब्रह्माण्ड नाथेश्वरि श्रीजनकात्मजा किशोरीजीके साथ ही उत्पन्न हुईं और श्रीकिशोरीजीकी भयात वहिने हैं सब ब्रह्मचारिणी सेवा श्रीयुगलसरकार में तत्सुख सुखी होकर कनकभवन श्री अयोध्या धामका प्रवन्ध कनकभवनमें रहकर अहर्निशि करती हैं। सृष्टिके आदिसे प्रथम नित्य साकेतमें (जहांसे उद्भव स्थितादि का प्रबंध होता है) श्रीकनकभवनविहारी की सेवामें रहती हैं । श्रीकनकभवनबिहारी का अवतार त्रेतामें होनेके कारण उपरोक्त सहचरियोंका अवतीर्ण होना अनिवार्य था अस्तु यहां जगदोद्धार हेतु पधारीं ।

(२) लीला, विहार, रहस्यादिकमें श्रीचंद्रकलाजी अपने अपने सह

चरी वर्ग सहित श्रीकिशोरीजी को पक्षमें झुकी रहती हैं और श्रीचारुशीलाजी अपने सहचरि वर्ग सहित श्री सरकार के पक्ष में इस प्रकार श्री कनकभवनमें दो यूथ श्रीदंपति लीलाविहारी के लाड लडाने हेतु सेवा तत्पर रहते हैं वैसे अभ्यन्तर दोनों पक्ष निरंतर एक ही हैं अभिनय विलास विना दो पक्षके सुंदर नहीं होता।

समयसेवाका	नाम यूथेश्वरी उभय पक्ष
मंगल भोग	श्री चारुशीलाजी व चन्द्रकलाजी
बल्लभ भोग	क्षेमाजी व चंद्राननाजी
श्रृंगार भोग	हेमाजी व चंद्रकान्तीजी
राज भोग	बरारोहा व चंद्वतीजी
उत्थापनभोग	लक्ष्मणाजी व चंद्रमुखीजी
संध्या भोग	सुलोचनाजी व चंद्रवलीजी
ब्यारू भोग	पद्मगंधाजी व चंद्रहासाजी
शयन भोग	सुभगाजी व चंद्रमोहनीजी

श्रीचारुशीलाजी की यूथेश्वरी उनके नीचे व चंद्रकलाजी की यूथेश्वरी उनके नीचे इस मान चित्रमें प्रत्यक्ष मालूम ही होती हैं एक एक यूथेश्वरिके आधीन कोटिन सहचरिगण हैं। तबतो महल का तथा अखिल ब्रह्माण्डका प्रबंध नित्य साकेतसे चलता है।

मानसीपूजन

मानसीपूजा का गहन विषय है और अति सरल भी। भावुक जिज्ञासु अपने सहचरि स्वरूपसे अपने पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा तथा शिक्षानुसार बताई हुई कोई भी यूथेश्वरीके बिभागाधीन रह कर महलमें श्रीयुगल सरकारकी सेवा अहर्निशि हर प्रकारकी समयानुकूल उपरोक्त मान चित्रांकित सेवाओंमें तत्पर हैं। भाग्यबश यदि समय मिले तो अष्ट पहर उसीमें निमग्न रहें यदि वह गृहस्थ हैं और समय न हो तो इस अष्ट पहर को एक घंटा या कममें संकुचित कर पूरा करलें और अपना जीवन लाहु उठा मनोवांछित फल प्राप्त करें।

इत्यलम्

इस कुञ्जीके लिखनेमें हम लोगोंको १०८ श्री महात्मा वेदान्ती रामपदार्थदासजी, श्रीमहात्मा बिनायक जी; १०८ श्री लाल साहब जीके पुजारी, जानकीजीवनशरणजी; राजकुमार लाल वीरेन्द्र बहादुर सिंहजी सैमरी राज (रायबरेली) महात्मा अवधशरण जी चारुशीला बाग अयोध्याजी; बाबू मुक्ताप्रसादजी मैनेजर कनकभवनके पौत्र डाक्टर ओमेश्वरप्रसादजीने बहुत सहायता दी। तद्धेतु हम परम कृतज्ञ हैं।

बिनीत-

पुस्तकालय विभाग

श्रीकनकभवन अयोध्याधाम।

लाइब्रेरियन रामऔतार

सुलेखक- पं०-[illegible]देवप्रसाद पुजारी

पं०- भुवन[illegible]ठादार

पं०- सीतारा[illegible]दार रक्षक पुस्तकालय

चुन्नरत्न ज[illegible]